यह हमारी आषा होनी चाहिए कि हमारे काम हमारे पार्थिव संघर्षों से कहीं अधिक दीर्घायु हैं

पुराने नियम में परमेष्वर के जन बहुत दीर्घायु जीवन जीते थे। उदाहरणार्थ, मूसा अपनी मृत्यु के समय 120 वर्ष का था। अब्राहाम 150 वर्ष का था और नूह की आयु 950 वर्ष की हुई! ऐसा लगता है कि उनके पास पर्याप्त समय था कि वे अपनी गल्तियों से सीखते और परमेष्वर के अनुसार जीवन जीकर एक छाप छोड़ जाते। परन्तु चाहे उनके पास कितने ही अतिरिक्त वर्ष क्यों न रहे हों, बाइबल बताती है कि अनन्तता की तुलना में मनुष्य का जीवन बहुत छोटा है।

परमेष्वर के राज्य की ख़ातिर कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य करने के लिए हमारे पास बहुत थोड़ा समय है। यहां तक कि ईष्वरीय लोगों ने भी संघर्ष किए। यीषु भी पार्थिव जीवन के संघर्षों से अछूता नहीं रहा। हमें चाहे किसी भी बाधा पर विजय प्राप्त करनी हो, यह हमारी आषा होनी चाहिए कि हमारे काम हमारे पार्थिव जीवन से कहीं अधिक दीर्घायु हैं। आज हम ऐसा क्या कर सकते हैं जो परमेष्वर की अनन्त "बड़ी तस्वीर" में कुछ योगदान दे सके?

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रभु, यह पहचानने में मेरी सहायता करें कि मेरा समय सीमित है और प्रत्येक क्षण महत्त्वपूर्ण है। मैं ऐसा जीवन जीना चाहता हूँ जिससे आप प्रसन्न होते हैं; मुझे दिखाएं कि मुझे कौन कौन से कदम उठाने की आवष्यकता है। मेरे जीवन की छोटी छोटी बातों पर भी ध्यान देने के लिए आपका धन्यवाद।

आज के लिए वचन

याकूब 4:14 और यह नहीं जानते कि कल क्या होगाः सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है।

लूका 21:33 आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।

परमेष्वर के वचन में हाथ उठाने की बजाय चिट्ठी डालने के बारे में अधिक प्रमाण मिलते हैं...

पतित मनुष्य का मानवीय स्वभाव किसी न किसी प्रकार का नियंत्रण प्राप्त करना चाहता है या जिन मामलों वे स्वयं शामिल हैं उन्हें निर्धारित करने के लिए वोट डालना चाहता हैं। तथापि, सारे पवित्रषास्त्र में, परमेष्वर अधिकारियों को नियुक्त करता है और हमारी अगुवाई करने के लिए स्वयं लोगों को चुनता है। पवित्रषास्त्र दर्षाता है कि जब भी परमेष्वर किसी एक कार्य को करने लिए एक से अधिक लोगों को चुनता है तो हमेषा किसी एक को उनपर अधिकारी नियुक्त करता है। यह सत्य हमें परिवार में, दास तथा स्वामी में, विवाह में, सरकार में, और कलीसिया में देखने को मिलता है। सहमति में उठे हुए हाथों से सत्य और परमेष्वर की इच्छा को निर्धारित नहीं किया जा सकता। ऐसा लगता है कि जितनी बार भी इस्त्राएलियों ने अपने लिए अगुवे स्वयं चुने या अपने मार्ग स्वयं निर्धारित किए, उसका परिणाम बर्बादी ही निकला। शायद इसीलिए परमेष्वर ने चिट्ठी डालने की विधि ठहराई, हमारी बहुत प्रार्थनाओं और परमेष्वर के लिए हमारे जीवनों को अलग करने के बाद इसकी भूमिका मोहरों से थोड़ा बढ़कर है। परमेष्वर से स्पष्ट वचन प्राप्त किए बिना, अधिकतर घटनाओं में, सर्वोत्तम विकल्प यही होगा कि किसी लोकप्रिय व्यक्ति का सहारा लेने की बजाय कतरी हुई ऊन पर भरोसा रख लें। हम ईष्वरीय परामर्षदाताओं के प्रोत्साहन को झुठला नहीं रहे हैं, परन्तु एक ही है जो हमारी अगुवाई कर सकता है और उसका नाम यीषु है। अपने जीवन की कमान उसे थमा दें।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय पिता, अपने मार्ग मुझे दिखाएं और अपने पवित्र आत्मा के द्वारा मेरे जीवन की अगुवाई करें। मैं अनेकों लोगों से बढ़कर आप में भरोसा रखता हूँ। अपने चुनिंदा परामर्षदाता मेरे पास भेजें और दिव्य सामर्थ के द्वारा मेरे जीवन की अगुवाई करें।

edit copy

आज के लिए वचन
न्यायियों 6:40 इस रात को परमश्ेवर ने ऐसा ही किया; अर्थात् केवल ऊन ही सूखी रह गई, और सारी भूमि पर ओस पड़ी।

प्रेरित 1:26 तब उन्हों ने उन के बारे में चिट्ठियां डालीं, और चिट्ठी मत्तिय्याह के नाम पर निकली, सो वह उन ग्यारह प्रेरितों के साथ गिना गया।।

यहोषू 18:10 तब यहोशू ने शीलों में यहोवा के साम्हने उनके लिये चिट्ठियां डालीं; और वहीं यहोशू ने इस्त्राएलियों को उनके भागों के अनुसार देश बांट दिया।

योना 1:7 तब उन्हों ने आपस में कहा, आओ, हम चिट्ठी डालकर जान लें कि यह विपत्ति हम पर किस के कारण पड़ी है। तब उन्हों ने चिट्ठी डाली, और चिट्ठी योना के नाम पर निकली।

आलौकिक का स्थान राजनीति को न लेने दें

आइए कल्पना करें कि परमेष्वर ने किसी कलीसिया के पासबान को, जिसे स्पष्ट तौर पर कलीसिया के पिता के रूप में जाना जाता है, जो कलीसिया के दर्षन के लिए जिम्मेदार है, कहा कि कलीसिया को किसी विदेषी मिषनरी के कार्य के लिए पांच लाख रूपए देने चाहिए। यह सामान्य बात है कि वह पासबान अपने अन्य अगुवों से इसके बारे में बात करेगा और उचित परामर्ष तथा इस बात की दृढ़ता के लिए उनसे प्रार्थना करने को कहेगा। अब कल्पना करें कि परामर्श के दौरान किसी अगुवे ने पासबान से कहा कि रकम बहुत ज्यादा है और दबाव डालने लगा कि रकम घटाकर पचास हजार रूपए कर लेनी चाहिए। जैसे जैसे सबकुछ आगे बढ़ता है, उन अगुवों या उस पासबान पर भी यह प्रलोभन आ सकता है कि अपना दायरा बढ़ाएं और अपनी व्यक्तिगत पदवी के समर्थन के लिए राजनैतिक प्रचार आरम्भ कर दें। इन राजनैतिक प्रक्रियाओं का अंत या तो समझौता होता है या विभाजन। यदि कलीसिया आखिरकार ढाई लाख रूपए ही भेज देती, तौभी उन्होंने किसी भी रूप में परमेष्वर का थोड़ा सा भी आज्ञापालन नहीं किया होता। यदि हम आलौकिक के साथ समझौता कर लेते हैं या राजनैतिक प्रक्रिया को परमेष्वर के निर्देषों में दखल करने देते हैं, तो कोई भी नहीं जीत पाएगा। या तो परमेष्वर ने कहा पांच लाख रूपए दे दो या उसने कहा कुछ भी न दो। भविष्यवाणियों को परखा जा सकता है परन्तु राजनैतिक प्रक्रिया के द्वारा नहीं। राजनीति समझौता करती है।

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रिय प्रभु, मैं आपकी कलीसिया के लिए प्रार्थना करता हूँ। राजनीति और समझौते की ओर ले जाने वाली बातों को कलीसिया से बाहर रखें। मैं चयन करता हूँ कि मैं न तो उनकी ओर खिंचा जाऊँगा और न ही उनके द्वारा इधर उधर भटकूँगा, जो मुझे अपने साथ मिला लेने के लिए मुझे प्रभावित करना चाहते हैं। मेरे जीवन में अपने चुने हुए अगुवों के साथ स्पष्टता से बात करें और मैं आपकी अगुवाई में चलूँगा।

आज के लिए वचन
प्रकाषितवाक्य 22:19 और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिस की चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।।

1 कुरिन्थियों 14:29 भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उन के वचन को परखें।

1 शमूएल 15:24 शाऊल ने शमूएल से कहा, मैं ने पाप किया है; मैं ने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर और उनकी बात सुनकर यहोवा की आज्ञा और तेरी बातों का उल्लंघन किया है।

edit copy

आज्ञापालन करना बलिदान चढ़ाने से उत्तम है

यह सिद्धांत हम परमेष्वर के वचन से सीखते हैं कि हम जो कुछ आज्ञाउल्लंघन करके खो देते हैं उसे बलिदान चढ़ाकर पूरी तरह वापस प्राप्त नहीं कर सकते। यह केवल मनुष्य के लिए ही नहीं बल्कि परमेष्वर के लिए भी सच है। हालाँकि परमेष्वर ने सब मनुष्यों को बचाने के लिए अपना पुत्र बलिदान किया.....फिर भी सब मनुष्य नहीं बचेंगे। मनुष्यों के आज्ञाउल्लंघन के कारण परमेष्वर कुछ लोगों को खो देगा जिनकी पूर्ति निर्दोष मेमने, यीषु मसीह के बलिदान के द्वारा भी नहीं की जा सकती। शमूएल और यषायाह दोनों भविष्यवक्ताओं ने इस सत्य को स्पष्ट रूप में बताया। यषायाह ने यह प्रष्न पूछा, "तुम बलिदान क्यों चढ़ाते हो, क्या इसलिए नहीं कि तुमने पाप किया है?" वह आगे कहता है कि परमेष्वर ने उन बलिदानों को तुच्छ जाना और वे उसके नथनों में दुर्गन्ध ठहरे क्योंकि वे उसे मनुष्य के पाप स्मरण दिलाते थे। यषायाह कहता है, इसका समाधान यही है कि बुराई करना छोड़ दो और परमेष्वर की इच्छा पूरी करना सीखो।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय पिता, मेरे पापों के लिए अपने पुत्र का बलिदान चढ़ाने और मेरे प्राणों के लिए उसकी कीमत को स्वीकार करने के लिए आपका धन्यवाद। अब जब मैं बुराई छोड़ देता हूँ और आपकी इच्छा पूरी करना सीखता हूँ तो यह समझने में मेरी सहायता करें कि अब किसी बलिदान की आवष्यकता नहीं है।

आज के लिए वचन

यषायाह 1:11 यहोवा यह कहता है, तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के हैं? मैं तो मेढ़ों के होमबलियों से और पाले हुए पशुओं की चर्बी से अघा गया हूं;

यषायाह 1:19–20 यदि तुम आज्ञाकारी होकर मेरी मानो, तो इस देश के उत्तम से उत्तम पदार्थ खाओगे; और यदि तुम न मानो और बलवा करो, तो तलवार से मारे जाओगे; यहोवा का यही वचन है।।

1 शमूएल 15:22–23 शमूएल ने कहा, क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन मानना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। देख बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिये उस ने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।

कई मामलों में दोनों ओर परमेष्वर के लोग मौजुद होते हैं

द्वितिय विष्व युद्ध के दौरान, ऐसा बताया जाता है कि कुछ जर्मन सैनिक, जो समर्पित मसीही थे और उनकी बाइबलें उनके हाथों में थी, पहाड़ियों पर से नोरमैंडी समुद्री तट को देख रहे थे, जबकि दूसरी ओर अमरीकी सैनिक, वे भी बाइबल साथ लेकर चलने वाले मसीही थे, भारी जर्मन गोलीबारी में इन समुद्री तटों पर तेजी से आगे बढ़ रहे थे। मैंने तो लोगों को यह भी कहते सुना है कि एक जर्मन अफसर ने दुष्मन की आक्रमणकारी सेना को आते हुए देखकर अपने सैनिकों से कहा कि घुटने टेको, अपने सिर झुकाओ और मोर्चा सम्भालने से पहले एक बार फिर प्रभु की प्रार्थना करो। कभी कभी यह कल्पना करना बहुत कठिन हो जाता है कि ऐसा कैसे हो सकता है कि ऐसे मामलों में भी परमेष्वर के लोग दोनों ओर हैं जो गंभीरता से प्रार्थना कर रहे हैं कि परमेष्वर की इच्छा पूरी हो और उसका राज्य आए और साथ साथ इस विष्वास पर भी कायम हैं कि उनकी ओर के लोग सही हैं। शायद यह भी एक कारण है कि परमेष्वर हमें प्रोत्साहित करता है कि हम अपने शत्रुओं से प्रेम करें और जब वे भूखें हैं तो उन्हें भोजन खिलाएं, और जब हम सताए जाते हैं तो उन्हें आषीष दें और अपनी विजय की महिमा स्वयं न लें बल्कि केवल परमेष्वर को ही पलटा लेने दें। क्या आपके समाज या देष में भी ऐसे मामलें हैं जिनमें दोनों ओर विष्वासी मौजुद हैं?

आज के लिए प्रार्थना

edit copy

हे प्रिय प्रभु, मुझे दूसरों पर तरस खाने में सहायता करें, चाहे वे मेरे जैसा विष्वास न करते हों या सबकुछ मेरे नज़रिए से न देखते हों। मुझे दूसरों के साथ वैसा व्यवहार करना सिखाएं जैसा मैं चाहता हूँ कि दूसरे मेरे साथ करें, यीषु के नाम में, आमीन।

आज के लिए वचन

रोमियों 14:1–7 जो विश्वास में निर्बल है, उसे अपनी संगति में ले लो; परन्तु उस की शंकाओं पर विवाद करने के लिये नहीं। क्योंकि एक को विश्वास है, कि सब कुछ खाना उचित है, परन्तु जो विश्वास में निर्बल है, वह साग पात ही खाता है। और खानेवाला न–खानेवाले को तुच्छ न जाने, और न–खानेवाला खानेवाले पर दोष न लगाए; क्योंकि परमेश्वर ने उसे ग्रहण किया है। तू कौन है जो दूसरे के सेवक पर दोष लगाता है? उसक स्थिर रहना या गिर जाना उसके स्वामी ही से सम्बन्ध रखता है, बरन वह स्थिर ही कर दिया जाएगा; क्योंकि प्रभु उसे स्थिर रख सकता है। कोई तो एक दिन को दूसरे से बढ़कर जानता है, और कोई सब दिन एक सा जानता हैः हर एक अपने ही मन में निश्चय कर ले। जो किसी दिन को मानता है, वह प्रभु के लिये मानता हैः जो खाता है, वह प्रभु के लिये खाता है, क्योंकि परमेश्वर का धन्यवाद करता है, और जो नहीं खाता, वह प्रभु के लिये नहीं खाता और परमेश्वर का धन्यवाद करता है। क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिये जीता है, और न कोई अपने लिये मरता है।

यदि आप यीषु जैसे बनना चाहते हैं तो आपको कलीसिया में आना होगा

कलीसिया मसीह की देह है, मसीह की दुल्हन है, और पृथ्वी पर परमेष्वर का परिवार है। इफिसियों की पत्री बताती है कि यीषु कलीसिया के लिए, अपनी देह और अपनी दुल्हन के लिए मरा। यह परमेष्वर की इच्छा है कि प्रत्येक विष्वासी स्थानीय विष्वासियों के परिवार का क्रियाषील अंग बने। तथापि, बहुत सारे लोग सोचते हैं कि ऐसे समर्पण के लिए उनके पास समय नहीं है। मसीह की दुल्हन के साथ विवाह करके उसके साथ वाचा बांधने की बजाय वे ऐसे व्यवहार करते हैं मानों वे मसीह की गर्लफ्रैंड के साथ डेट पर जा रहे हैं। वे शायद इस बात को कभी न जान पाएं कि मसीह कलीसिया से कितना प्रेम करता है और उसके प्रति कितना समर्पित है। पुराने नियम में, परमेष्वर ने अपनी संतानों को बलिदान चढ़ाने, पर्व मनाने, अपनी भेंट और दषमांष लाने का आदेष देने के द्वारा कलीसिया में आने के लिए नियुक्त किया। यीषु भी कलीसिया में जाया करते थे। यही वह स्थान है जहां वे स्कूल गए, पढ़ना सीखा, अपना पहला संदेष प्रचार किया और अपने पारम्पारिक सबत मनाए। यदि हम आगे देखें, तो स्वर्ग और उसमें परमेष्वर के मेमने की आराधना की तस्वीर भी कलीसिया सभा की तस्वीर से कम नहीं है। यदि आप स्वर्ग जाएंगे तो आप कलीसिया में जाएंगे! परमेष्वर को प्रसन्न करें और किसी स्थानीय कलीसिया में अपना जीवन समर्पित करें।

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, मैं उस परिवार के लिए आपका धन्यवाद करता हूँ जो आप ने इस संसार में हमारे लिए तैयार किया है। मैं वायदा करता हूँ कि जिस स्थानीय कलीसिया में आपने मुझे रखा है, मैं उसका अंग बनूँगा। मुझे उत्पादक बनाएं और मुझे प्रत्येक अनुग्रह दें, यीषु के नाम में, आमीन।

आज के लिए वचन

इब्रानी 10:25 और और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जैसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उस दिन को निकट आते देखो, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करो।

लूका 4:16 और वह नासरत में आया; जहां पाला पोसा गया था; और अपनी रीति के अनुसार सब्त के दिन आराधनालय में जा कर पढ़ने के लिये खड़ा हुआ।

मलाकी 3:10 सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजनवस्तु रहे; और सेनाओं का यहोवा यह कहता है, कि ऐसा करके मुझे परखो कि मैं आकाश के झरोखे तुम्हारे लिये खोलकर तुम्हारे ऊपर अपरम्पार आशीष की वर्षा करता हूं कि नहीं।

पहली कक्षा के अध्यापक मूर्ख नहीं होते

ऐसा नहीं है कि पहली कक्षा के अध्यापकों को गणित नहीं आता; बल्कि उनमें इस बात की समझ होती है कि वे पहली कक्षा के विद्यार्थियों को गणित सिखाने का प्रयास न करें। विद्यार्थी और अध्यापक में सबसे बड़ी दूरी पहली कक्षा के दौरान ही होती है। उसके बाद, वह दूरी घटती जाती है, अंततः एक दिन अध्यापक जान जाता है कि उसका षिष्य ज्ञान, बुद्धि या कौषल में उससे आगे निकल गया है। तथापि, एक व्यक्ति जीवन की सीढ़ी पर कितना ही ऊपर क्यों न चढ़ जाए, अंततः वह अपनी नींव से अधिक सुरक्षित नहीं होता।

इसी कारण, हम परमेष्वर के राज्य में जिन लोगों को ला रहे हैं उनके जीवन में अच्छी नींव डालने को नज़रअंदाज़ न करें। मसीहियत के साधारण और बुनियादी सिद्धांतों को सीखने में व्यतीत होने वाले समय को हमें भूलना नहीं चाहिए।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रभु, मुझे आपके वचन की साधारणता के साथ संतुष्ट होना और अपना पहला प्रेम न छोड़ना सिखाएं। मुझे अपने जीवन की नींव चट्टान पर, जो मसीह है, बनाने में सहायता करें।

आज के लिए वचन

मत्ती 7:24–27 इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुनकर उन्हें मानता है वह उस बुद्विमान मनुष्य के समान ठहरेगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया। और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उस की नेव चटान पर डाली गई थी। परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य के समान ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आन्धियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिरकर सत्यानाश हो गया।।

2 कुरिन्थियों 11:3 परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांप ने अपनी चतुराई से हव्वा को बहकाया, वैसे ही तुम्हारे मन उस सीधाई और पवित्रता से जो मसीह के साथ होनी चाहिए कहीं भ्रष्ट न किए जाएं।

स्वर्ग जाने के बाद आप एक बात पर पछताएंगे कि आप वहां पहले क्यों नहीं आ गए

बाइबल बताती है कि परमेष्वर ने स्वर्ग को इतनी अद्भुत रीति से बनाया है कि हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते कि यह कितना सुन्दर होगा। कल्पना करने की कोषिष करें कि यह कितना अद्भुत होगा...... सुनहरी सड़कें, न पीड़ा, न आँसू, न पाप, और न हार। आप न तो थकेंगे और न आपको भूख लगेगी, तापमान एकदम सिद्ध होगा। सबकुछ सिद्ध है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं? नहीं, आप नहीं कर सकते। परमेष्वर ने कहा कि यह आपकी कल्पना से भी बेहतर है।

मुझ पर भरोसा रखें, हमसे पहले जितने भी लोग जा चुके हैं, वे सारे 100 प्रतिषत हमसे कहीं बेहतर हैं, और मोतियों के फाटकों में से प्रवेष कर लेने के बाद यदि आप उनसे वापस आने के लिए कहें, तो वे वहीं रहने का चयन करेंगे। जब आप इस पृथ्वी पर अंतिम सांस लेंगे तो आप पूरे आत्मविष्वास के साथ कह पाएंगे कि मेरा सबसे महान दिन आने पर है।

आज के लिए प्रार्थना

edit copy

हे परमेष्वर, ऐसे अद्भुत भविष्य के लिए आपका धन्यवाद। मैं अनन्तता के लिए उत्साहित हूँ। हे पिता, आपका वचन कहता है कि आपकी वापसी तक मैं आपके राज्य के प्रसार में व्यस्त रहूं। इस पृथ्वी पर आपके राज्य के निर्माण के लिए हर सम्भव प्रयास करने के लिए मैं अपने आप को समर्पित करता हूँ। मुझे बेहतर कार्यकर्त्ता बनना सिखाएं। मेरी प्रार्थना है कि मैं पृथ्वी पर ऐसी बपौती छोड़ जाऊँ जिसकी चर्चा हम स्वर्ग में कर सकें।

आज के लिए वचन

1 कुरिन्थियों 2:9 परन्तु जैसा लिखा है, कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी वे ही हैं, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिये तैयार की हैं।

1 पतरस 1:4 अर्थात् एक अविनाशी और निर्मल, और अजर मीरास के लिये।

प्रकाषितवाक्य 14:13 और मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि लिख; जो मुरदे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, आत्मा कहता है, हां क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे, और उन के कार्य उन के साथ हो लेते हैं।

हम काम समाप्त करने के लिए काम नहीं करते बल्कि इसे अच्छी तरह से पूरा करने के लिए करते हैं

हमें तब तक किसी काम को पूरा नहीं समझना चाहिए जब तक कि वह अच्छी तरह नहीं हुआ है। क्योंकि हमारा लक्ष्य काम समाप्त करना नहीं बल्कि अपना सर्वोत्तम करना है। कभी कभी हम पर काम समाप्त करने का दबाव इतना हावी हो जाता है कि हम अपने उत्पाद की गुणवत्ता पर से ध्यान हटा बैठते हैं। उदाहरणार्थ, यह सत्य प्रबन्धकीय और उत्पादन प्रक्रिया में ही नहीं बल्कि हमारे जीवन के आत्मिक पहलूओं में भी लागू होता है। कभी कभी प्रार्थना, स्तुति, बाइबल अध्ययन और बाबइल पढ़ने जैसे आत्मिक पहलू भी दिनचर्या बन जाते हैं और जब हम इन्हें फटाफट समाप्त करके अपनी सूची में इन पर निषान लगाकर अगले काम की ओर बढ़ते हैं तो यह बहुत उबाऊ भी बन सकता है। आज अपने आप को प्रोत्साहित करें कि अगला काम आरम्भ करने से पहले जो काम आप अभी कर रहे हैं उस पर पूरा ध्यान लगाएं। आप अपने आप को अधिक संतुष्ट, अधिक उत्पादक पाएंगे और आपके पास बहुत समय भी बचेगा।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय प्रभु, मैं जिन कामों में शामिल हूँ, विषेषकर आत्मिक कामों ध्यान लगाने में मेरी सहायता करें। मैं आपको अपना समय ही नहीं बल्कि अपना मन भी देने का समर्पण करता हूँ। आपने जो काम मुझे दिया है उसे पूरा करने में मेरी सहायता करें, ताकि मैं अपनी पूरी दौड़ पूरी कर सकूँ।

आज के लिए वचन

इफिसियों 5:16 और अवसर को बहुमोल समझो, क्योंकि दिन बुरे हैं।

व्यवस्थाविवरण 6:5 तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।

2 तीमुथियुस 4:7 मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है।

क्षमा एक हक़ है, पूर्वावस्था लाना एक जिम्मेदारी है

जब यीषु ने कलवरी के क्रूस पर अपनी जान दी, तब उसने हमें पाप से आज़ाद करके खरीद लिया और हमें क्षमा प्राप्त हो गई। क्षमा एक हक़ है। चाहे हम दूसरों को निराष भी कर दें तौभी उन्हें यही आदेष दिया गया है कि वे हमें क्षमा कर दें। आगे, बाइबल हमें बताती है कि यदि हम परमेष्वर के आगे अपने पापों को

अंगीकार कर लें, तो वह हमें क्षमा करने में विष्वासयोग्य है, और इस प्रकार क्षमा मांगने वालों को क्षमा करने का वायदा करता है। जब हम किसी को क्षमा करते हैं, जोकि उनका हक़ है, तो इसका अर्थ है कि हम उन्हें उनकी गलती के लिए दण्ड पाते हुए नहीं देखना चाहते। हम उस गलती के लिए सबक सिखाना, बदला लेना या पलटा लेना बंद कर देंगे। क्षमा एक हक़ है, तथापि, पूर्वावस्था लाना एक जिम्मेदारी है। ऐसा भी सम्भव है कि आप दूसरों को क्षमा करने या उनसे क्षमा प्राप्त करने के बाद भी उनके साथ अपना संबंध न सुधारें। पूर्वावस्था लाने के लिए अक्सर आवष्यक होता है कि गलती करने वाला मन फिराए और हरजाना भरने के लिए ईमानदारी से प्रयास करे। अपने संबंधों को जांचें। क्या आपने क्षमा प्राप्त की है? क्या आपने पूर्वावस्था प्राप्त कर ली है? आप इस बारे में क्या कर सकते हैं?

आज के लिए प्रार्थना
हे स्वर्गिक पिता, जब दूसरे लोग मुझे नुकसान पहुंचाते हैं तो उन्हें क्षमा करने का अनुग्रह और सामर्थ मुझे दें और जब मुझे क्षमा की आवष्यकता हो तब दूसरों को पूर्वावस्था में लाने के लिए प्रत्येक आवष्यक कदम उठाने में मेरी सहायता करें। आमीन।

आज के लिए वचन
1 यूहन्ना 1:9 यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने, और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।

लूका 6:37 दोष मत लगाओ; तो तुम पर भी दोष नहीं लगाया जाएगाः दोषी न ठहराओ, तो तुम भी दोषी नहीं ठहराए जाओगेः क्षमा करो, तो तुम्हारी भी क्षमा की जाएगी।

2 कुरिन्थियों 5:20 सो हम मसीह के राजदूत हैं; मानो परमेश्वर हमारे द्वारा समझाता हैः हम मसीह की ओर से निवेदन करते हैं, कि परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो।

भजन 133:1 देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!

इसे साधारण रखें, इसें बार बार बोलें, इसे ज्वलंत बनाएं

सफल संदेषवाहक बनने की कुंजी यह है कि अपने संदेष को साधारण रखें, इसे बार बार दोहराएं और निष्चित करें कि इसे पूरे जुनून के साथ सुनाएं। हमें प्रभु यीषु मसीह का सुसमाचार इस रीति से सुनाने के लिए बुलाया गया है कि लोग इस पर विष्वास करें और इसे स्वीकार करें। जब हम किसी व्यक्ति को प्रभु यीषु का सुसमाचार सुनाते हैं या परमेष्वर के वचन में से कोई सिद्धांत सिखाते हैं, तो जो हम दूसरों से कह रह हैं वह व्यक्ति उसे दोहराने के योग्य होना चाहिए। इसीलिए, यह अत्यावष्यक है कि हम उन बातों पर ध्यान दें जो परमेष्वर हमें देता है और उन्हें इस रीति से काम में लाएं जिस से वे अपने निषाने तक पहुंचें, परमेष्वर के लक्ष्य को पूरा करें और सर्वोत्तम परिणामों को प्राप्त करें। इसका तात्पर्य यह है कि हम परमेष्वर के वचनों के सत्यों पर ध्यान दें और उन्हें इस रीति से प्रस्तुत करें कि उन्हें सुनने वाले उन सत्यों को याद रख सकें और दूसरों को भी सिखा सकें।

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रिय प्रभु, मुझे सुसमाचार का प्रभावषाली संदेषवाहक बनने में और, जैसे जैसे मैं परिपक्व होता हूँ, यह समझने में भी सहायता करें कि संदेष का प्रभाव भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना स्वयं संदेष। मुझे इस रीति से बोलने में सहायता करें कि मेरे श्रोता मेरे संदेष को स्वीकार करें और उसे दूसरों तक पहुंचाएं।

आज के लिए वचन
2 कुरिन्थियों 11:13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं।

edit copy

व्यवस्थाविवरण 6:7–9 और तू इन्हें अपने बालबच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना। और इन्हें अपने हाथ पर चिन्हानी करके बान्धना, और ये तेरी आंखों के बीच टीके का काम दें। और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।।

2 तीमुथियुस 2:2 और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

यदि यह आपमें ज्वलंत नहीं है तो यह सुनने वालों में भी ज्वलंत नहीं होगा

हमारे जीवनकाल में, हम कहानियों, भाषणों, संदेषों, समाचारों के द्वारा और परिवार तथा मित्रों के द्वारा बहुत सारी बेकार बातें सुनते हैं। ऐसी बातें जिनका न तो कोई अर्थ होता है और न ही उनके द्वारा कोई भावनात्मक प्रतिउत्तर मिलता है। बेकार की बातें बहुत ज्यादा होती हैं ताकि लोग वक्ता को सुनते हुए अपने मन या कल्पनाओं में अधिक उत्पादक वार्तालाप कर सकें। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जीवन की क्रांतिकारी बातें सीखी नहीं जाती बल्कि पकड़ी जाती हैं। इतिहास के सभी महान वक्ताओं में एक बात सामान्य थी, वे सब अपने संदेष के प्रति जुनून से भरे थे। चाहे महान सैन्य अफसर हों, सांसारिक नेता हों, कवि हों, या मंच के कलाकार, उनका जुनून उनके श्रोताओं का पूरा ध्यान खींच लेता था और उन्हें निर्णय लेने पर मजबूर करता था। आप अपने जुनून से लिपटे रहें तो यह दूसरों से लिपटा रहेगा!

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, मुझे जुनून दें और आपके वचन के सत्यों के प्रति मेरी कायलता को फिर से नया करें। मेरी आत्मा को झंझोड़ें ताकि मैं हियाव से, आत्मविष्वास के साथ बोलूं और आपकी इच्छा की ज्वलंत चाहत को दूसरों तक पहुंचाऊँ, यीषु के नाम में, आमीन।

आज के लिए वचन

इब्रानी 10:35 सो अपना हियाव न छोड़ो क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है।

लूका 4:36 इस पर सब को अचम्भा हुआ, और वे आपस में बातें करके कहने लगे, यह कैसा वचन है? कि वह अधिकार और सामर्थ के साथ अशुद्ध आत्माओं को आज्ञा देता है, और वे निकल जाती हैं।

मत्ती 12:36 और मै तुम से कहता हूं, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे।

जीवन की क्रांतिकारी बातें सीखी नहीं जाती, बल्कि पकड़ी जाती हैं

लोगों के सीखने के तरीके अधिकतर इन विषाल वर्गों में बांटे जाते हैंः वे लोग जो सुनकर सीखते हैं, वे लोग जो करके सीखते हैं, और वे लोग जो पढ़कर सीखते हैं। हाँ यह भी सच है कि अधिकतर लोग इन तरीकों के मिश्रण से भी सीखते हैं और जरूरी नहीं है कि वे एक ही तरीके से सीखें। सामान्यतः, जीवन के अधिकांष पाठ षिक्षा के इन तीन क्षेत्रों के द्वारा ही सीखे जाते हैं। तथापि, जीवन की क्रांतिकारी बातें अधिकांषतः सीखी नहीं जाती बल्कि पकड़ी जाती हैं। जिन्हें मैं क्रांतिकारी बातें कहता हूँ उनमें परमेष्वर के आत्मा की बातें शामिल हैं जो बहुत गहन हैं और जिन्हें खोखले शब्दों के द्वारा समझा नहीं जा सकता। इसी कारण, परमेष्वर के सिद्धांतों को सीखने वाले और सिखाने वाले, दोनों में वह अभिषेक होना चाहिए जो केवल पवित्र आत्मा की सामर्थ से ही मिलता है, जो स्वयं एक महान षिक्षक और सारे सत्य का मार्गदर्षक है। पवित्र आत्मा का अभिषेक क्षण भर में लोगों के मनों और हृदयों में सत्य स्थानांतरित कर सकता है, प्रकाषन, प्रेरणा और प्रोत्साहन ला सकता है। प्रार्थना करें कि परमेष्वर आपको और आपके षिक्षकों को जीवन के क्रांतिकारी सत्यों को उजागर करने के लिए आवष्यक अभिषेक दे।

edit copy

आज के लिए प्रार्थना
हे परमेष्वर मुझे और मेरे षिक्षकों को पवित्र आत्मा का अभिषेक दें ताकि हम आपके सत्य के वचनों को उचित ढंग से सम्भालें।

आज के लिए वचन
1 यूहन्ना 2:27 और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उस की ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इस का प्रयोजन नही, कि कोई तुम्हें सिखाए, बरन जैसे वह अभिषेक जो उस की ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है, और झूठा नहीं: और जैसा उस ने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उस में बने रहते हो।

विरोध व्यर्थ है ..... अंत में आप पूरी तरह थक जाएंगे

परमेष्वर के पास एक योजना है, वह सफल होगा, और, वर्तमान में, उसमें शामिल होने का अवसर आपके पास है। तथापि, सारी मानवजाति के लिए परमेष्वर की योजना में शामिल होना प्रत्येक विष्वासी का अपना चयन है। परमेष्वर चाहता है कि सारा संसार सुसमाचार सुन ले और यीषु को अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार कर ले। वह चाहता है कि आप जाकर दूसरों को उनके जीवन के लिए परमेष्वर की योजना के बारे में बताएं, परन्तु आपके जीवन के लिए परमेष्वर की योजना का क्या होगा? यह परमेष्वर की सुदृढ़ इच्छा है कि वह इस आषा से आपमें और आप पर कार्य करे कि एक दिन वह आपके द्वारा कार्य कर सके, परन्तु चाहे आप मसीह का गवाह न बनने का फैसला भी ले लें, तौभी परमेष्वर आप पर कार्य करते रहने के लिए समर्पित है। परमेष्वर तब तक प्रत्येक विष्वासी के जीवन कार्य करता रहेगा जब तक कि वे उसके प्रिय पुत्र, यीषु के स्वरूप में सिद्ध न हो जाएं। परमेष्वर इसके लिए समर्पित रहेगा, चाहे इसमें उसे पूरी अनन्तता ही क्यों न लग जाए! क्यों न उसके साथ मिलकर कार्य करें, क्योंकि आपका विरोध व्यर्थ है और इससे केवल प्रक्रिया लम्बी होगी?

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रिय प्रभु, जब आप मेरे द्वारा उत्तमता से कार्य करने के लिए मुझमें और मेरे द्वारा कार्य कर रहे हैं तो मुझे दिखाएं कि मैं आपके साथ कैसे कार्य कर सकता हूँ। मैं पवित्र आत्मा की सामर्थ, जो मुझे रूपांतरित कर रही है, का विरोध कभी नहीं करूँगा।

आज के लिए वचन
रोमियों 8:29 क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।

1 यूहन्ना 3:2 हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।

1 कुरिन्थियों 3:18 कोई अपने आप को धोखा न दे: यदि तुम में से कोई इस संसार में अपने आप को ज्ञानी समझे, तो मूर्ख बने; कि ज्ञानी हो जाए।

हमारा लक्ष्य यह है कि हमारा उत्पाद उत्पादन प्रक्रिया को सह जाए

परमेष्वर ने जीवन को इस प्रकार से बनाया है कि सबकुछ "अपनी जाति के अनुसार" पुनरुत्पादन करता है। उत्पत्ति की पुस्तक में सृष्टि की रचना की कथा जीवन की पद्यति को नियुक्त करती है। जब परमेष्वर ने वृक्षों, पौधों, समुद्र की मछलियों, आकाष के पक्षियों, वनपषुओं और मनुष्यों की रचना की तो उसने यह भी आदेष दिया कि प्रत्येक जीवित वस्तु और प्राणी में उसका बीज हो जो उसकी जाति अनुसार पुनरुत्पादन करे। इस नियम को विस्तृत रूप देते हुए और वचन को आधार मानते हुए जीवन के अन्य पहलूओं को भी

edit copy

इसमें शामिल किया जा सकता है। मित्रता के बीज प्रतिदिन बोने से अधिक मित्र मिलते हैं, बिल्कुल वैसे ही जैसे बुरी संगति अच्छे व्यक्ति के चरित्र को भी बिगाड़ देती है। इसी कारण, हमें उन बातों के बारे में सावधान रहना चाहिए जो हमारे चारों ओर हैं और हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं। उदाहरणार्थ, यदि हम सफल, उत्पादक, खुष या पवित्र होना चाहते हैं तो हमें उन लोगों की संगति में रहना चाहिए जिनमें ये गुण पाए जाते हैं। और, कभी न भूलें, जीवन केवल आपके लिए ही नहीं है, इसे दूसरों में भी निवेष करें।

आज के लिए प्रार्थना
हे स्वर्गिक पिता, मुझे वे संबंध दें जो आप मेरे जीवन में लाना चाहते हैं ताकि मैं दूसरों से सीख सकूँ और जरूरतमंदों को सिखा सकूँ। मुझे उन लोगों से अलग कर दें जो मुझे गलत बातें सिखाएंगे और मुझ पर आपके वचन के विपरीत प्रभाव डालेंगे।

आज के लिए वचन
1 कुरिन्थियों 15:33 धोखा न खाना, बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।

नीतिवचन 18:24 मित्रों के बढ़ाने से तो नाश होता है, परन्तु ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है।

उत्पत्ति 1:11 फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से हरी घास, तथा बीजवाले छोटे छोटे पेड़, और फलदाई वृक्ष भी जिनके बीज उन्ही में एक एक की जाति के अनुसार होते हैं पृथ्वी पर उगें; और वैसा ही हो गया।

दर्षन के साथ अगुवाई करें

ज़िंदगी में कभी न कभी प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को अगुवाई के स्थान में, ड्राइवर की सीट पर बैठे हुए पाता है, इस असमंजस में कि किस ओर मुड़े। यह तब भी सच है जब आप अपने जीवन में केवल अपनी अगुवाई कर रहे हैं। इससे पहले कि लोग यह निर्णय लें कि उन्हें किस ओर मुड़ना है, उन्हें यह पता होना चाहिए कि वे कहां जा रहे हैं। अगुवेपन की स्थिति एक व्यक्ति से कई मांगें करती है, जिनमें सबसे बड़ी मांग उस दिषा के बारे में आत्मविष्वास है जिसमें वे अगुवाई कर रहे हैं। इसी कारण, यह अत्यावष्यक है कि हम ज़िदगी के ये दो पहलू जान लें: पहला यह कि हमें यह पता होना चाहिए कि ज़िंदगी के नक्षे पर हम कहां हैं और दूसरा यह कि हमें कहां होना चाहिए। चाहे कोई भी कठिनाई हो, कोई भी दबाव हो, हम किसी भी क्षण रूक कर परमेष्वर की ओर दृष्टि कर सकते हैं और इससे हमें स्पष्ट मार्गदर्षन मिलेगा। इस आत्मविष्वास के बिना अपना अगला कदम न उठाएं कि यह कदम आपको आपके जीवन के लिए परमेष्वर की योजना के निकट ले जाएगा। दर्षन के साथ अगुवाई करें!

आज के लिए प्रार्थना
हे पिता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप मेरे जीवन के लिए मुझे दर्षन दें और इसे स्पष्ट कर दें ताकि मुझे सुदृढ़ दिषानिर्देष मिल सके और मैं इस संसार की राहों में भटक न जाऊँ। मेरी सहायता करें कि मैं अपनी और दूसरों की अगुवाई सीधे आपकी इच्छा की ओर कर सकूँ।

आज के लिए वचन
नीतिवचन 29:18 जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है वह धन्य होता है।

प्रेरित 16:9—10 और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरूष खड़ा हुआ, उस से बिनती करके कहता है, कि पार उतरकर मकिदुनिया में आ; और हमारी सहायता कर। उसके यह दर्शन देखते ही हम ने तुरन्त मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर, कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिये बुलाया है।

edit copy

हबक्कूक 2:2 यहोवा ने मुझ से कहा, दर्शन की बातें लिख दे; वरन पटियाओं पर साफ साफ लिख दे कि दौड़ते हुए भी वे सहज से पढ़ी जाएं।

जीवन को सकारात्मकता में लेने की षक्ति को कम न आँकें

एक पुरानी कहावत है कि यदि आप सोचते हैं कि आप यह काम कर सकते हैं तो आप सही सोचते हैं या यदि आप सोचते हैं कि आप यह काम नहीं कर सकते तौभी आप सही सोचते हैं। ज़िंदगी ऐसे ही काम करती है। क्यों? क्योंकि परमेष्वर ने ज़िंदगी को आदेष दिया है कि वह आपको वैसे ही प्रत्युत्तर दे जैसा आप सोचते हैं, जैसा आप बोलते हैं और जैसा आप विष्वास करते हैं। मैने अपने जीवनकाल में देखा है कि आषावादी लोगों को निराषावादी लोगों की अपेक्षा अधिक लाभ होता है। निराषावाद अक्सर तनाव और असुरक्षा उत्पन्न करता है। जब लोग मुसीबतें आने और बहुत बुरा होने की कल्पनाएं करते हैं तो कई ऐसी बातों के डर और चिंताओं में जीवन बिताते हैं जो कभी होती ही नहीं। जबकि दूसरी ओर, जो लोग जीवन को आषावादी रूप में लेते हैं उन्हें समस्याओं के मध्य में भी आनन्द, शांति और धीरज मिलता है। आप क्या विष्वास करते हैं? आपका अंगीकार क्या है और आप जीवन को किस रूप में लेते हैं?

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रभु, मैं अपने और दूसरों के भविष्य के लिए सर्वोत्तम सोचूंगा, सर्वोत्तम विष्वास करूँगा और सर्वोत्तम बोलूंगा। मेरी सहायता करें, यीषु के नाम में, आमीन।

आज के लिए वचन

फिलिप्पियों 4:8 निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरनीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सद्‌गुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

नीतिवचन 18:21 जीभ के वश में मृत्यु और जीवन दोनों होते हैं, और जो उसे काम में लाना जानता है वह उसका फल भोगेगा।

नीतिवचन 6:2 तो तू अपने ही मूंह के वचनों से फंसा, और अपने ही मुंह की बातों से पकड़ा गया।

आप अपना इतिहास आज ही आरम्भ कर सकते हैं

दमिष्क के मार्ग में प्रेरित पौलुस का जीवन परिवर्तन होने से पहले वह उन लोगों को सताने वाले के रूप में विख्यात था जो यीषु को मसीहा मानते थे। उस दिन उसका जीवन बदल गया और एक नए इतिहास का आरम्भ हुआ। हम सभी के पास भी यह अवसर है कि हम जब भी चाहें अपने जीवन का नया अध्याय आरम्भ कर सकते हैं। हम अपने प्रत्येक निर्णय के साथ अपनी जीवनगाथा लिख रहे हैं जिसे एक दिन सब लोग पढ़ेंगे। जैसा आप चाहते हैं कि इतिहास आपको याद रखे, उसके अनुसार आज एक नया रोमांच आरम्भ करें। ऐसे चयन करें जो आपके इच्छित जीवन के गुणों के अनुसार हों और प्रत्येक निर्णय के साथ अपने जीवन के इतिहास में एक नया पन्ना जोड़ लें।

आज के लिए प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मैं अपनी छवि आपके वचन के अनुसार बनाना चाहता हूँ। मेरी सहायता करें कि मैं यीषु के विष्वासी के गुणों पर आधारित निर्णय लूँ। जब मैं असफल होता हूँ, मुझे क्षमा कर दें, मुझे उठाएं और नया आरम्भ करने में मेरी सहायता करें। आपकी ओर से मुझे मसीह में मिली हुई ऊँची बुलाहट के निषाने की ओर बढ़ते हुए मैं पुराने को भूलता हूँ और नए को गले लगाता हूँ।

आज के लिए वचन

edit copy

नीतिवचन 22:1 बड़े धन से अच्छा नाम अधिक चाहने योग्य है, और सोने चान्दी से औरों की प्रसन्नता उत्तम है।

फिलिप्पियों 3:13 हे भाइयों, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं: परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ।

यषायाह 43:18–19 अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ। देखो, मैं एक नई बात करता हूं; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उस से अनजान रहोगे? मैं जंगल में एक मार्ग बनाऊंगा और निर्जल देश में नदियां बहाऊंगा।

जहां संसाधन सांझे हैं, वहां, अवष्य है, कि जिम्मेदारी भी सांझी हो

कई वर्ष पहले हमारी कलीसिया ने रूस में एक नई मण्डली के लिए एक इमारत खरीदी। यह स्थान मॉस्को से लगभग 800 कि.मी. पूर्वोत्तर में था, जहां पहले से ही जमा देने वाले तापमान में पूर्व से आने वाली ठण्डी हवाओं, जो अपने साथ हिम उड़ाकर लाती थी, के कारण सर्दी का मौसम बहुत कठोर हो जाता था। इस नई खरीदी गई इमारत में तेल से जलकर गर्मी पैदा करने वाला एक सिस्टम था। वह तेल पाइप के माध्यम से एक टैंक में से आता था, जहां से आसपास की अन्य इमारतों में भी तेल जाया करता था। हालाँकि यह सांझा संसाधन हमारे लिए बहुत लाभदायक था, जिसके बिना मण्डली उस इमारत में इकट्ठा नहीं हो सकती थी, परन्तु यह निःषुल्क नहीं था। जैसे कि स्पष्ट है कि इस सांझे संसाधन के साथ इस्तेमाल किए जाने वाले तेल की कीमत अदा करने और सिस्टम के रखरखाव का खर्च अदा करने की सांझी जिम्मेदारी भी मौजुद थी। ऐसा ही उस प्रत्येक व्यक्ति के साथ होता है जो परमेष्वर के राज्य और/या कलीसिया से लाभ प्राप्त कर रहा है......यह ध्यान में रखते हुए कि परमेष्वर के अनुग्रह से हमारा उद्धार हुआ है, परमेष्वर के कार्य के लिए धन, स्टाफ और सहयोग देना हम सभी की जिम्मेदारी है। क्या आप अपना भाग अदा कर रहे हैं?

आज के लिए प्रार्थना

हे परमेष्वर मैं अपना भाग अदा करना चाहता हूँ। मुझे बचाने के उद्देष्य से यीषु को भेजने और मुझे सिखाने तथा मेरे साथ अपना जीवन बांटने के उद्देष्य से मेरे पास लोगों को भेजने के लिए आपका धन्यवाद। जिम्मेदार व्यक्ति बनने और यीषु के नाम में मेरा भाग अदा करने में मेरी सहायता करें।

आज के लिए वचन

2 कुरिन्थियों 8:11–15 इसलिये अब यह काम पूरा करो; कि जैसा इच्छा करने में तुम तैयार थे, वैसा ही अपनी अपनी पूंजी के अनुसार पूरा भी करो। क्योंकि यदि मन की तैयारी हो तो दान उसके अनुसार ग्रहण भी होता है जो उसके पास है न कि उसके अनुसार जो उसके पास नहीं। यह नहीं, कि औरो को चैन और तुम को क्लेश मिले। परन्तु बराबरी के विचार से इस समय तुम्हारी बढ़ती उनकी घटी में काम आए, ताकि उन की बढ़ती भी तुम्हारी घटी में काम आए, कि बराबरी हो जाए। जैसा लिखा है, कि जिस ने बहुत बटोरा उसका कुछ अधिक न निकला और जिस ने थोड़ा बटोरा उसका कुछ कम न निकला।

मसीही कौन होता है?

आप कैसे जानेंगे कि कोई व्यक्ति मसीही है? क्या केवल इस कारण कि वे किसी संगठित कलीसिया के विष्वास, परम्पराओं और सिद्धांतों को मानते हैं, चाहे वे कैथोलिक, बैपटिस्ट, मैथोडिस्ट, एसेम्बली ऑफ गॉड, प्रेसबिटेरियन, लूथरन, ग्रीक ऑर्थाडॉक्स, आरमेनियन, या कोई और इंटर डिनोमिनेषनल समूह ही क्यों न हो? शायद कुछ लोग अपने पूर्वजों, संस्कृति, परम्पराओं या जातीय पृष्ठभूमि के कारण अपने आप को मसीही कहते हैं। तथापि, सत्य यह है कि "मसीही" होने का अर्थ मसीह–जैसा.....मसीह का अनुयायी होना है। बाबइल बताती है कि यीषु की मृत्यु और कलीसिया के जन्म के कई वर्ष पष्चात्, विष्वासी सबसे पहले

edit copy

अन्ताकिया में ही मसीही कहलाए थे। ऐसा लगता है कि यहां एक पद्यति है जो हमारा ध्यान खींचती है। मसीही कहलाए जाने से पहले, लोगों की पहचान यीषु जो मसीहा था अर्थात् अभिषिक्त मसीह के विष्वासियों के रूप में होती थी। आज भी ऐसा ही है और हमेषा ऐसा ही रहेगा। एक मसीही इस कारण मसीही नहीं कहलाता क्योंकि वह मसीही परिवार में जन्मा है, कुछ परम्पराएं या संस्कृति अपना ली है, कुछ रीतियों का पालन करता है या किसी कलीसिया के साथ जुड़ा हुआ है। यीषु का अनुयायी बनने के लिए पहले यीषु का विष्वासी बनना जरूरी है। इसके लिए व्यक्तिगत और गम्भीर कायलता की आवष्यकता होती है जिसके बाद हमारा अंगीकार आवष्यक है कि अब हम उसके हैं। क्या आप एक मसीही हैं?

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय प्रभु, मैं विष्वास करता हूँ कि यीषु नासरी आपका पुत्र और मेरा उद्धारकर्त्ता है। मैं उन्हें अपना प्रभु स्वीकार करता हूँ और मैं अपने जीवन के प्रतिदिन उनके वचनों का पालन करूँगा। मैं प्रार्थना करता हूँ कि अन्य लोग मुझमें मसीह को देखें।

आज के लिए वचन

प्रेरित 11:26 वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उस की बातें सुनकर, उसे अपने यहां ले गए और परमेश्वर का मार्ग उस को और भी ठीक ठीक बताया।

रोमियों 10:9–10 कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।

क्या मसीही बनने के लिए आपको यहूदी बनना पड़ेगा?

यह प्रष्न यरूषलेम की प्रथम कलीसिया में प्रेरितों के बीच बहस का एक मुद्दा था। प्रेरितों के काम के अध्याय 15 में उस कलीसिया के पासबान और यीषु के आधे भाई याकूब के विचार और निर्णय दर्ज हैं। यह निर्णय लिया गया कि यीषु मसीह का विष्वासी बनने के लिए यहूदी मत को स्वीकार करने की आवष्यकता नहीं है। आज हम इस प्रष्न को तो नहीं सुनते परन्तु ऐसे कई और प्रष्न हमारे सामने आते हैं। आज कई चर्च डिनोमिनेषंस मांग करती हैं कि लोगों को यीषु मसीह का विष्वासी बनकर परमेष्वर के राज्य के अधिकार और लाभ प्राप्त करने से पहले उनकी कलीसिया के विष्वास के सिद्धांतों और रीतिरिवाजों को स्वीकार करना पड़ेगा। मेरे मित्रों, यह गलत षिक्षा है, और इसे उद्धार के लिए एक शर्त के रूप में नहीं रखा जाना चाहिए। तथापि, एक बार नया जन्म पा लेने के बाद, यह उचित है कि हम एक जैसे सिद्धांतों, विष्वास और रीतियों को मानने वाले अन्य विष्वासियों के साथ संगति रखें। परमेष्वर को अनुमति दें कि वह अपनी इच्छानुसार, लोगों की इच्छानुसार नहीं, अन्य विष्वासियों को एक समान अधिकार और आदर देते हुए आपको अपनी कलीसिया में नियुक्त करे।

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, यह याद रखने में मेरी सहायता करें कि सबसे पहले मैं आपका समर्पित विष्वासी हूँ और मेरे जीवन में आपकी इच्छा के स्थान पर सेवा करने के लिए बुलाया गया हूँ। मुझे अनुग्रह और बुद्धि दें ताकि मैं आपके द्वारा बुलाए गए अन्य लोगों को स्वीकार कर सकूँ, चाहे वे मेरे जैसे न भी हों। मुझे दोष लगाने वाला, आलोचक और बाहर रहने वाला बनने से बचाएं क्योंकि आपने अपनी योजना में सभी को शामिल किया है।

आज के लिए वचन

यूहन्ना 10:16 और मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं; मुझे उन का भी लाना अवश्य है, वे मेरा शब्द सुनेंगी; तब एक ही झुंड और एक ही चरवाहा होगा।

editcopy

प्रेरितों 15:19–20 इसलिये मेरा विचार यह है, कि अन्यजातियों में से जो लोग परमेश्वर की ओर फिरते हैं, हम उन्हें दु:ख न दें। परन्तु उन्हें लिख भेंजें, कि वे मूरतों की अशुद्धताओं और व्यभिचार और गला घोंटे हुओं के मांस से और लोहू से परे रहें।

1 कुरिन्थियों 12:18 परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगो को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है।

जीवन एक परीक्षा है, इसमें सफल हों – क्योंकि यह खुली पुस्तक वाली परीक्षा है

सबसे कठिन प्रलोभन और जीवन के संकट भी बाइबल में दर्ज हैं। बहुत बार हमें लगता है कि हमारे सामने आने वाली परिस्थितियां और हालात हमें परखते हैं। कभी कभी ज़िंदगी बहुत कठिन हो जाती है और हममें से कुछ लोग स्वाभाविक रूप से परीक्षाएं देने में अच्छे नहीं हैं।

अच्छा समाचार! हमारे सामने आने वाली परीक्षाएं बिना उत्तरों के नहीं आतीं। ये उत्तर परमेष्वर के वचन में लिखे हुए हैं। न केवल प्रत्येक परीक्षा खुली पुस्तक वाली परीक्षा है, बल्कि हमें प्रोत्साहित किया गया है कि हम अपने षिक्षकों और पहले परीक्षा दे चुके लोगों से प्रष्न पूछें और उनसे उत्तर प्राप्त करें। निराष न हों। यदि हम इस बार परीक्षा में सफल नहीं होते, तो हमें इसे दोबारा देने का अवसर भी मिल सकता है। पुस्तक खोलें!

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, मैं आपके वचन के माध्यम से जानता हूँ कि आप बुराई के द्वारा अपनी संतानों की परीक्षा नहीं लेते। मैं जानता हूँ कि मेरे सामने आने वाली बुराई के रचनेहार आप नहीं हैं......बल्कि आप मेरी सभी समस्यों का समाधान हैं। मुझे अपना वचन सिखाएं और दूसरों के जीवन में आने वाली परीक्षा में उनकी सहायता करने का अवसर भी दें। बाइबल के लिए आपका धन्यवाद।

आज के लिए वचन

2 तीमुथियुस 3:16 सारा पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।

याकूब 1:13 जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे, कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।

यीषु को प्रसन्न करने के लिए जरूरी नहीं है कि आप मेरे जैसे बनें, परन्तु यह निष्चित है कि आपको अपने जैसा बनना छोड़ना होगा

परमेष्वर आपसे इतना अधिक प्रेम करता है कि वह आपको ऐसा नहीं छोड़ेगा जैसे आप हैं। इसी कारण उसने मुझे प्रोत्साहित किया है कि मैं ये आत्मिक पाठ लिखूं और जीवन के वे सिद्धांत आपके साथ बाँटू जो उसने मुझे दिए हैं। मैंने जाना है कि अपने बहुत सारे अनुभव और विष्वास बाँटने से शायद ऐसा लगे कि मैं कोई अधिकारी हूँ या शायद लोग सोचें कि मैं उन्हें अपने जैसा बनाना चाहता हूँ। मेरा विष्वास करें कि मुझे सारे प्रष्नों के उत्तर नहीं पता हैं, परन्तु इतना जानता हूँ कि किसे पता हैं। न ही मैं ऐसा सोचता हूँ कि मेरे जैसा बन जाने से सबकी समस्याएं हल हो जाएंगी क्योंकि मेरे सामने भी समस्याएं आती हैं और मैं भी जीवन की सामान्य चुनौतियों का सामना करता हूँ। यीषु जैसा बनने के लिए आपको मेरे जैसा बनने की आवष्यकता नहीं है, परन्तु आपको अपने जैसा बनना छोड़ना पड़ेगा। क्यों? क्योंकि हम सभी परमेष्वर के हाथों में ऐसे आते हैं जैसे कुम्हार के हाथों में मिट्टी आती है और वह हमें अपनी इच्छा के अनुसार ढालता और तैयार करता है, यीषु को प्रसन्न करने और उसके जैसा बनने की क्षमता हममें डालता है। जब आप इन आत्मिक पाठों को पढ़ते हुए उसकी ओर देखते हैं जो वास्तव में आपसे बात कर रहा है, अपने आप को अपने स्वामी के हाथों में सौंप दें। आवाज़ के भीतर से आती हुई आवाज़ को सुनें और आज बदल जाएं।

edit copy

आज के लिए प्रार्थना
हे प्रिय प्रभु, मैं यीषु जैसा और अधिक बनना चाहता हूँ और मुझे आपकी सहायता की आवष्यकता है। मुझे मेरे जीवन की वे बातें दिखाएं जिन्हें बदलना आवष्यक है और मुझे अपने हाथों में मिट्टी बना लें।

आज के लिए वचन
यषायाह 64:8 तौभी, हे यहोवा, तू हमारा पिता है; देख, हम तो मिट्टी है, और तू हमारा कुम्हार है; हम सब के सब तेरे हाथ के काम हैं।

यिर्मयाह 18:6 यहोवा की यह वाणी है कि इस कुम्हार के समान तुम्हारे साथ क्या मैं भी काम नहीं कर सकता? देख, जैसा मिट्टी कुम्हार के हाथ में रहती है, वैसा ही हे इस्राएल के घराने, तुम भी मेरे हाथ में हो।

परमेष्वर के राज्य की सफलता लोगों के चार समूहों पर निर्भर है: जाने वाले, ठहरने वाले, दानी और प्रार्थना करने वाले

एक सेना कुछ आवष्यक तत्वों पर निर्भर रहती है। पहला, वे लोग जो विदेषी युद्धभूमि पर जाकर शत्रु का सामना करने और युद्ध लड़ने के लिए तैयार और समर्पित हैं। दूसरा, वे लोग जो उतने ही समर्पित हैं कि ठहरे रहें और अपने देष के लोगों और सम्पत्ति की रक्षा करें। तीसरा, वे लोग होते हैं जो सभी दलों और प्रमुख कमांडर के बीच वार्तालाप की सभी लाइनों को खुला रखने के लिए प्रषिक्षित किए जाते हैं। ये वार्तालाप की लाइनें निर्देष देने, आपूर्ति का आदेष देने, और ताज़ा समाचार भेजने के लिए अत्यावष्यक हैं। और अंत में परन्तु सबसे छोटा नहीं, वे लोग जो किसी भी काम में शामिल नहीं हैं परन्तु उनके बिना सेना का अस्तित्व ही संभव नहीं है। ये उस देष के नागरिक हैं जो अपनी दिनचर्या में व्यस्त रहते हैं, धन कमाते हैं और टैक्स भरते हैं, जिससे हमारी सेना की आर्थिक आपूर्ति होती है। परमेष्वर का राज्य और स्थानीय कलीसिया भी ऐसी ही है। दोनों को अपने मिषन पूरे करने के लिए जाने वाले, ठहरने वाले, दानियों और प्रार्थना करने वालों की आवष्यकता पड़ती है। आपकी स्वेच्छा और समर्पण किसमें है? परमेष्वर ने आपको क्या बनाया है?

आज के लिए प्रार्थना
हे परमेष्वर मैं आपके राज्य और अपनी स्थानीय कलीसिया का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि आपने मुझे एक उद्देष्य के साथ सृजा है और एक निष्चित आवष्यकता की पूर्ति के लिए तैयार किया है। मुझे मेरा स्थान दिखाएं और मैं अपना भाग पूरा करने के लिए समर्पित रहूँगा। आपका धन्यवाद, यीषु।

आज के लिए वचन
1 कुरिन्थियों 12:12, 14, 18, 19, 20 क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है। इसलिये कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं। परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगो को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक करके देह में रखा है। यदि वे सब एक ही अंग होते, तो देह कहां होती? परन्तु अब अंग तो बहुत से हैं, परन्तु देह एक ही है।

सुसमाचार इस पर आधारित नहीं है कि यह करना है और यह नहीं करना है ... बल्कि इस पर कि यह हो चुका है

मूसा की व्यवस्था नियमों और कानूनों, जीवन के निर्देषों, यह करो और यह न करो जैसी बातों पर आधारित थी। एक दिन परमेष्वर आपको स्वीकार कर सकता था और अगले ही दिन ठुकरा भी सकता था। व्यवस्था

edit copy

नियम बनाने, न्याय करने और सज़ा देने की मांग करती है। व्यवस्था के आधीन, कोई भी व्यक्ति धर्मी नहीं ठहर सकता था और सभी दोषी थे।

तथापि, सुसमाचार एक अलग तस्वीर पेष करते हैं। जब परमेष्वर के पुत्र ने सब मनुष्यों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दिए, तब सबकुछ बदल गया। मनुष्यजाति का मेलमिलाप परमेष्वर के साथ हो गया और वे परमेष्वर के अनुग्रह की छत्रछाया में आ गए। व्यवस्था संतुष्ट हुई, न्याय किया गया, और जुर्माना भरा गया। अब परमेष्वर के पास हमारी पहुंच यह करो या यह न करो जैसे नियमों के आधार पर नहीं होती, बल्कि "हो चुके" पवित्र कार्य के द्वारा। यीषु ने इसे किया, यह हो चुका है, यह पूरा हो गया है, और विष्वास के द्वारा यह पूरा हो चुका कार्य हम तक पहुंचता है। हम परमेष्वर के नियमों को इसलिए नहीं मानते ताकि वह हमें स्वीकार कर ले, बल्कि हम उसकी इच्छा की पूर्ति करते हैं क्योंकि वह हमें स्वीकार कर चुका है।

आज के लिए प्रार्थना
हे पिता, मैं आपके पुत्र यीषु को अपने उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करता हूँ और उसे अपने जीवन के सिहांसन पर बैठाता हूँ। मैं उसके पूरे हो चुके कार्य में विष्वास के द्वारा जीने का चयन करता हूँ। आमीन।

आज के लिए वचन
रोमियों 3:20—22 क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके साम्हने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है। पर अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की धार्मिकता प्रगट हुई है, जिस की गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं। अर्थात् परमेश्वर की वह धार्मिकता, जो यीशु मसीह पर विश्वास करने से सब विश्वास करनेवालों के लिये है; क्योंकि कुछ भेद नहीं।

गलातियों 2:20 मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित हैः और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिये अपने आप को दे दिया।

कभी कभी कुछ काम इसलिए पूरे नहीं होते क्योंकि वे किसी और के द्वारा नहीं बल्कि आपके द्वारा पूरे होंगे
अक्सर जब परमेष्वर आपसे कुछ कहता है, तो ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वह आपके द्वारा कार्य करना चाहता है और वह कार्य दूसरों को सौंप देने से वह कार्य पूरा नहीं होगा। 2 राजा 4 अध्याय में एलीषा और शुनेमिन स्त्री के बारे में सोचें। उस स्त्री का बेटा बीमार होकर मर गया। वह नबी के पास गई और उसे अपनी समस्या बताई। बहुत चिंता के साथ, एलीषा ने अपने सेवक के हाथ अपनी छड़ी भेजी कि वह उसे उस लड़के के ऊपर रख दे और उस मृत को फिर से जीवित करे। तथापि, एलीषा के सेवक ने वापस आकर कहा कि वह लड़का जीवित नहीं हुआ।

इस बार, एलीषा स्वयं गया और उस मृत लड़के के शरीर पर लेट गया और अंततः परमेष्वर ने उस लड़के को पुनः जीवित कर दिया। यह चमत्कार उस व्यक्ति के द्वारा क्यों नहीं हुआ जिसे एलीषा ने भेजा था? मैं नहीं जानता क्यों, परन्तु मैं यह जानता हूँ: कभी कभी कुछ काम इसलिए पूरे नहीं होते क्योंकि वे किसी और द्वारा नहीं बल्कि आपके द्वारा पूरे होंगे।

आज के लिए प्रार्थना
हे स्वर्गिक पिता, मैं चाहता हूँ कि आप मुझसे बात करें और मेरे हाथों के द्वारा और उन के द्वारा भी जिन्हें मैं आपका काम सौंपता हूँ, कार्य करें। मुझे सिखाएं कि मैं कौन सा चमत्कार अपने हाथों से करूँ और कौन सा दूसरों के हाथों में सौंप दूँ। आपका धन्यवाद, आमीन।

आज के लिए वचन

edit copy

2 राजा 4:31–35 उन से पहिले पहुंचकर गेहजी ने छड़ी को उस लड़के के मुंह पर रखा, परन्तु कोई शब्द न सुन पड़ा, और न उस ने कान लगाया, तब वह एलीशा से मिलने को लौट आया, और उसको बतला दिया दिया, कि लड़का नहीं जागा। जब एलीशा घर में आया, तब क्या देखा, कि लड़का मरा हुआ उसकी खाट पर पड़ा है। तब उस ने अकेला भीतर जाकर किवाड़ बन्द किया, और यहोवा से प्रार्थना की। तब वह चढ़कर लड़के पर इस रीति से लेट गया कि अपना मुंह उसके मुंह से और अपनी आंखें उसकी आंखों से और अपने हाथ उसके हाथों से मिला दिये और वह लड़के पर पसर गया, तब लड़के की देह गर्म होने लगी। और वह उसे छोड़कर घर में इधर उधर टहलने लगा, और फिर चढ़कर लड़के पर पसर गया; तब लड़के ने सात बार छींका, और अपनी आंखें खोलीं।

यदि आप अपने सपनों का भविष्य पाना चाहते हैं तो उस भविष्य के लिए आपको अभी से कार्य करना होगा

वह जीवनभर समस्याओं का कारण ही रहा। वास्तव में, उसकी सबसे नई योजना का अंत इतना बुरा हुआ था कि उसे अपना घर छोड़ना पड़ा और उसकी वापसी की कोई आषा नहीं थी। उसके साथ अब केवल उसके दूर के एक संबंधी का नाम, उसकी युक्तियां और प्रभु के साथ नया नया संबंध था।

तब उसकी मुलाकात राहेल से हुई। और अब याकूब को पता था कि उसके भविष्य में क्या था, क्योंकि उसे उसके सपनों की राजकुमारी मिल गई थी। तथापि, केवल लक्ष्य जान लेने से ही परिणामों का आष्वासन नहीं मिल सकता; इसे पूरा करने के लिए याकूब को कार्य करना था। उसने राहेल के पिता के साथ एक सौदा किया, और अपने आप को प्रमाणित करना और अपने भविष्य के लिए प्रबंध करना आरम्भ कर दिया। प्रभु ने याकूब को एक बेहतर कल की आषा दी थी, परन्तु फिर भी वह अपेक्षा कर रहा था कि याकूब उसकी योजना में शामिल हो। इस अनुभव के द्वारा, याकूब ने एक महत्त्वपूर्ण पाठ सीख लिया जो उसने कम से कम अपने एक पुत्र को सिखा दिया। क्या आपने उसे अपने पुत्र, स्वप्नहारे, को यह कहते हुए नहीं सुना कि जब सबकुछ कठिन हो जाए तो हार न मानना? "यूसुफ, याद रखना, यदि तुम अपने सपनों का भविष्य पाना चाहते हो तो उस भविष्य के लिए तुम्हें अभी से कार्य करना होगा।"

यह आज भी एक अच्छा परामर्ष है!

<u>आज के लिए प्रार्थना</u>

हे पिता, आपका वचन कहता है कि आपके पास मेरे जीवन के लिए एक अच्छी योजना है, मुझे आषा और भविष्य देने की योजना! जैसे मैं अपने भविष्य की प्रतीक्षा करता हूँ, कृपया मुझे वे कार्य दिखाएं जो उसे पाने के लिए मुझे अभी करने हैं। हे पिता, आने वाले भविष्य के लिए परिश्रम करने का बल मुझे देने के लिए आपका धन्यवाद।

<u>आज के लिए वचन</u>

उत्पत्ति 29:18 सो याकूब ने, जो राहेल से प्रीति रखता था, कहा, मैं तेरी छोटी बेटी राहेल के लिये सात वर्ष तेरी सेवा करूंगा।

हम तब परमेष्वर से दूर होने लगते हैं जब या तो परमेष्वर चलता है परन्तु हम नहीं....या तब जब हम उस दिषा में चलने लगते हैं जहां परमेष्वर नहीं जाना चाहता

परमेष्वर से दूर हो जाना उसी क्षण अधिक चिंताजनक नहीं लगता। एक समय आया जब अब्राहाम और उसके भतीजे लूत ने देखा कि अच्छा संबंध बनाए रखने के लिए अलग हो जाना बुद्धिमानी है। प्रभु ने उन्हें इतनी अधिक आषीष दी थी कि संसाधनों को लेकर उनके सेवकों में झगड़ा होने लग गया। अब्राहाम ने लूत को पहला चयन करने का अवसर खुषी खुषी दे दिया कि वह अपने पषु कहां चराना चाहता है। अब यहां लूत ने सबसे बड़ी गलती की। बाइबल हमें बताती है कि लूत ने "अपने लिए" चुन लिया।

edit copy

शायद यह जरूरी न लगे, परन्तु लूत ने अपने चाचा के समान प्रभु से परामर्ष नहीं लिया। वास्तव में, उसने सर्वोत्तम भूमि चुन ली। परन्तु परमेष्वर जानता था कि लूत ने सर्वोत्तम भूमि नहीं चुनी – क्योंकि जो भूमि लूत ने चुनी थी उसका कोई भविष्य नहीं था। परमेष्वर ने उस नगर को ही नष्ट कर दिया जिसमें लूत नेता बना था, और उसने अपना सबकुछ खो दिया। उसने बहुत देर से सीखा कि हम तब परमेष्वर से दूर होने लगते हैं जब या तो परमेष्वर चलता है परन्तु हम नहीं.....या तब जब हम उस दिषा में चलने लगते हैं जहां परमेष्वर नहीं जाना चाहता। सफल होना अच्छा है, परन्तु जब हम लूत के समान गलत चयन करते हैं तो कुछ भी अच्छा नहीं हो सकता और हम अपने आप को परमेष्वर से दूर कर लेते हैं। निष्चित कर लें कि आप हमेषा परमेष्वर के समीप आते रहें।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रभु, मैं अपने सब कामों और सब निर्णयों में आपको प्रसन्न करना चाहता हूँ। कृपया मुझे आपकी आवाज़ स्पष्टता से सुनने के लिए कान दें, आपके कामों को देखने के लिए आंखें दे और ऐसा हृदय दें जो सबसे ज्यादा आपसे प्रेम करे। जब मैं आपके वचन का अध्ययन करता हूँ, मुझे दिखाएं कि मैं बुद्धिमानी से चयन कैसे करूँ। मैं आपका अनुसरण करना चाहता हूँ – मुझे अपने से दूर न होने दें!

आज के लिए वचन

उत्पत्ति 13:11–13 सो लूत अपने लिये यरदन की सारी तराई को चुन के पूर्व की ओर चला, और वे एक दूसरे से अलग हो गए। अब्राम तो कनान देश में रहा, पर लूत उस तराई के नगरों में रहने लगा; और अपना तम्बू सदोम के निकट खड़ा किया। सदोम के लोग यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे।

परमेष्वर ने जिन वस्तुओं की मांग नहीं की है वह उसका भुगतान भी नहीं करेगा

कल्पना करें कि आप एक रेस्तरां में हैं और वेटर आपके मेज को उन पकवानों से भरने लगे जिनकी मांग आपने की ही नहीं है। भोजन चाहे कितना ही अच्छा दिखे, स्वादिष्ट हो, या अच्छी खुषबू वाला हो, परन्तु आप उन पकवानों के बिल का भुगतान नहीं करना चाहेंगे जिनकी मांग आपने नहीं की है। आपको कैसा लगेगा जब वही वेटर आपसे सारे भोजन के बिल का भुगतान करने की मांग करने लगे?

हाल ही में एक देष में मेरे साथ ऐसा ही हुआ। हालाँकि मैं अच्छा बना रहा, परन्तु मैं सुदृढ़ रहा। वेटर के लिए यह हैरानीजनक था कि मैंने उन सब पकवानों के बिल का भुगतान करने से मना कर दिया जिनकी मांग मैंने नहीं की थी। मैं मानता हूँ कि कभी कभी परमेष्वर भी ऐसा ही करता है। वह उस प्रत्येक बिल का भुगतान करने के लिए बाध्य नहीं है जो हम अपनी इच्छानुसार बनाते हैं। प्रार्थनापूर्वक यह निर्णय लें कि परमेष्वर के लिए सर्वोत्तम क्या है और उसे अपना धन कहां खर्च करना चाहिए, अन्यथा सारे बिल का भुगतान आपको स्वयं करना पड़ सकता है।

आज के लिए प्रार्थना

हे पिता, मुझसे बात करें और मुझे बुद्धि दें कि मैं उन्हीं कामों में अपने आप को शामिल करूँ जो आपकी इच्छा के दायरे में हैं। मेरी सहायता करें कि मैं उन वस्तुओं पर आपके संसाधन खर्च न करूँ जिन पर आप भी खर्च नहीं करेंगे।

आज के लिए वचन

लूका 12:16–20 उस ने उन से एक दृष्टान्त कहा, कि किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा, कि मैं क्या करूं, क्योंकि मेरे यहां जगह नहीं, जहां अपनी उपज इत्यादि रखूं। और उस ने कहा; मैं यह करूंगाः मैं अपनी बखारियां तोड़ कर उन से बड़ी बनाऊंगा; और वहां अपना सब अन्न और संपत्ति रखूंगाः और अपने प्राण से कहूंगा, कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत संपत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह। परन्तु परमेश्वर ने उस से कहा; हे मूर्ख, इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगाः तब जो कुछ तू ने इकट्ठा किया है, वह किस का होगा?

edit copy

याकूब 4:13–15 तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्यापार करके लाभ उठाएंगे। और यह नहीं जानते कि कल क्या होगाः सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है। इस के विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, कि यदि प्रभु चाहे तो हम जीवित रहेंगे, और यह या वह काम भी करेंगे।

यदि यह आपका बच्चा है तो आप ही इसका पालन पोषण करें

कुछ वर्ष पहले, एक व्यक्ति और उसकी पत्नी हमारी कलीसिया में आए। उन्होंने मुझसे मिलने का अनुमति मांगी कि मुझे उस दर्षन के बारे में बताएं जो उन्हें लगता था कि परमेष्वर ने उन्हें दिया है। जब मैंने उन्हें सुना तो मैं एक बात के विषय में चिंतित हो गया कि वे दर्षन के एक महत्त्वपूर्ण तत्व से चूक रहे हैं ... किसी को जन्म देने के बाद उसे सम्भालने की जिम्मेदारी। उन्होंने मुझे बताया कि उन्हें बस की सेवकाई आरम्भ करने के द्वारा कलीसियाओं की सहायता करने के लिए बुलाया गया है। तथापि, बहुत विचार विमर्ष के बाद भी वे उस सेवा में कार्य करने या उसे आगे बढ़ाने और उसकी देखभाल करने के प्रति समर्पित नहीं हुए। वे हमारी कलीसिया में अपनी चाहतों के बीज तो बोना चाहते थे परन्तु उसके बाद कोई जिम्मेदारी उठाने को तैयार नहीं थे। वास्तव में, वे अपनी सेवकाई को छोड़ किसी और सेवकाई या कलीसिया के प्रति समर्पित ही नहीं थे। मैंने उन्हें बहुत छिछला होने के कारण डाँटा, क्योंकि वे सोचते थे कि कलीसियाओं या कलीसियाओं के अगुवों में दर्षन की कमी थी। हममें दर्षन की कमी नहीं है, बल्कि उन लोगों की कमी है जो सेवकाइयों के जन्म के बाद उनकी देखभाल करने के लिए समर्पित होते हैं। सो, यदि परमेष्वर आपको किसी सेवकाई का पिता या माता बनाता है, तो केवल बच्चा पैदा करने से अधिक जिम्मेदार बनें....बच्चे का पालन पोषण करें।

आज के लिए प्रार्थना

हे प्रिय प्रभु, मेरी सहायता करें कि मैं केवल अपने विचारों को दूसरों के मनों में डालने से अधिक जिम्मेदार बनूँ। जिन बातों को आप मेरे द्वारा जन्म दे रहे हैं, उनकी देखभाल निरंतर करते रहने के लिए आवष्यक बुद्धि मुझे दें।

आज के लिए वचन

2 कुरिन्थियों 11:28 और और बातों को छोड़कर जिन का वर्णन मैं नहीं करता सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है।

2 कुरिन्थियों 8:16 और परमेश्वर का धन्यवाद हो, जिस ने तुम्हारे लिये वही उत्साह तीतुस के हृदय में डाल दिया है।

फिलिप्पियों 2:20 क्योंकि मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे।

edit copy